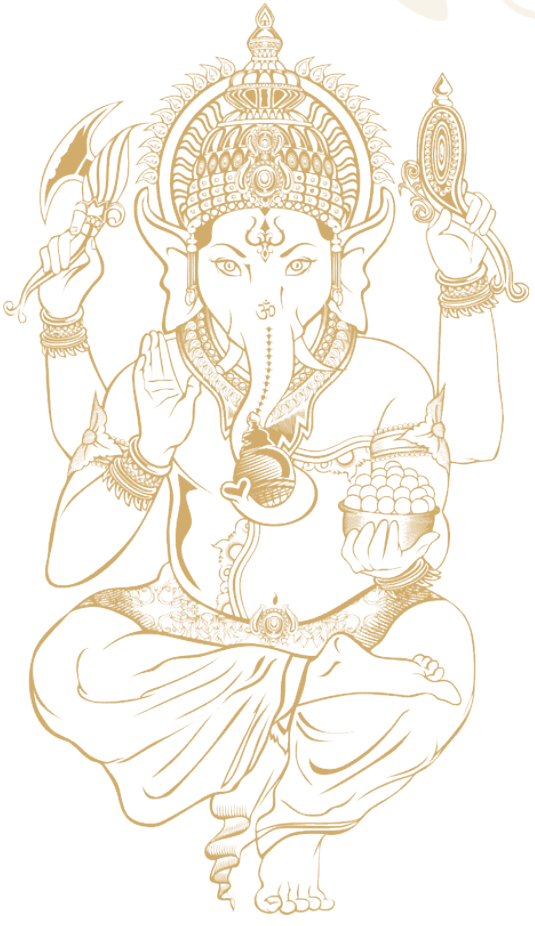

DIGVIJAY SINGH

AAKRITI

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119848907

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
15-16/10/1996	जन्म तिथि	11/10/1995
मंगल-बुधवार	दिन	बुधवार
घंटे 05:55:00	जन्म समय	07:53:00 घंटे
घटी 58:48:43	जन्म समय(घटी)	03:51:48 घटी
India	देश	India
Theog	स्थान	Rohru
31:07:00 उत्तर	अक्षांश	31:12:00 उत्तर
77:21:00 पूर्व	रेखांश	77:45:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:20:36	स्थानिक संस्कार	-00:19:00 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:23:30	सूर्योदय	06:18:43
17:47:44	सूर्यास्त	17:52:42
23:48:45	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:00

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शनि 8वर्ष 3मा 4दि	22:03:28	कन्या	लग्न	तुला	12:45:03	शुक्र 6वर्ष 11मा 18दि
केतु	29:06:39	कन्या	सूर्य	कन्या	23:30:05	राहु
20/01/2022	10:52:04	वृश्चि	चंद्र	मेष	22:01:17	29/09/2025
20/01/2029	28:04:32	कर्क	मंगल	तुला	29:15:59	29/09/2043
केतु 18/06/2022	17:24:25	कन्या	बुध व	कन्या	11:58:43	राहु 11/06/2028
शुक्र 19/08/2023	16:44:08	धनु	गुरु	वृश्चि	18:18:18	गुरु 04/11/2030
सूर्य 24/12/2023	20:04:52	सिंह	शुक्र	तुला	07:09:48	शनि 10/09/2033
चन्द्र 24/07/2024	08:42:10	मीन व	शनि व	कुंभ	25:37:21	बुध 30/03/2036
मंगल 21/12/2024	14:08:55	कन्या व	राहु	तुला	02:40:20	केतु 17/04/2037
राहु 08/01/2026	14:08:55	मीन व	केतु	मेष	02:40:20	शुक्र 17/04/2040
गुरु 15/12/2026	06:50:41	मक	हर्ष	मक	02:44:05	सूर्य 12/03/2041
शनि 24/01/2028	01:11:19	मक	नेप	धनु	28:59:03	चन्द्र 11/09/2042
बुध 20/01/2029	07:41:32	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	05:05:37	मंगल 29/09/2043

लग्न-चलित

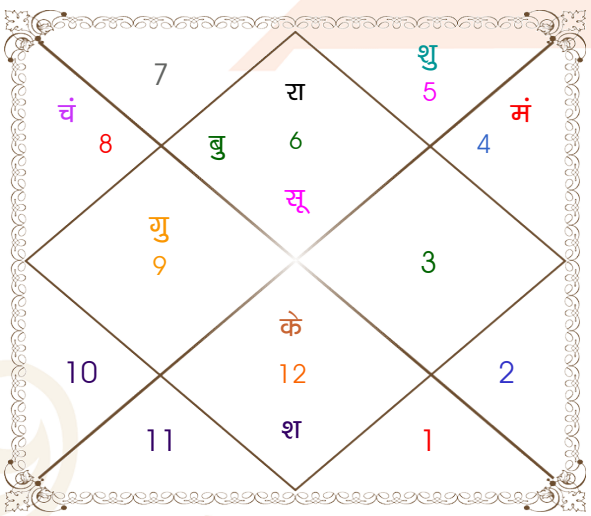

लग्न-चलित

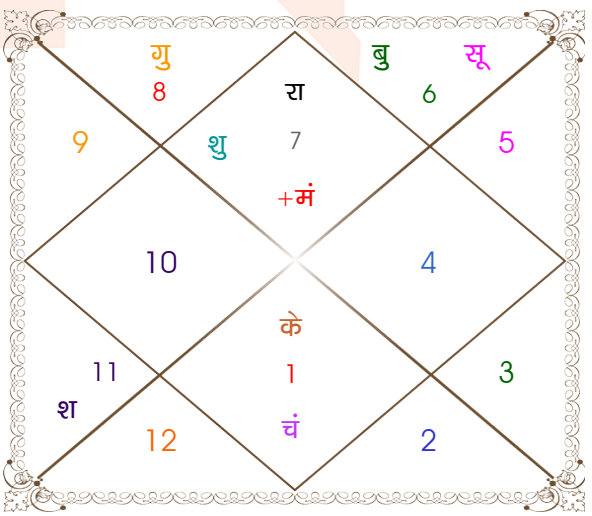

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	गज	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	16.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

क्प्ळटप्श्र ।लै प्छळभ का वर्ग सर्प है तथा ।।ज्ञत्प्ज्प का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्प्ळटप्श्र ।लै प्छळभ और ।।ज्ञत्प्ज्प का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

क्प्ळटप्श्र ।लै प्छळभ मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

।।ज्ञत्प्ज्प मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु ।।ज्ञत्प्ज्प कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु क्ळटप्श्र ।ल्ै प्छळझ कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल क्ळटप्श्र ।ल्ै प्छळझ कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

क्ळटप्श्र ।ल्ै प्छळझ तथा ।।ज्ञत्प्ज् में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।